बहूभाषी मासिक अख़बार

सदा-ए-बुलंद

RNI NO.: UPMUL/2023/90347

हमारी क़लम इन्साफ़ तक...

शाहजहाँपुर से प्रकशित

वर्ष :03 अंकः 17 06 शाहजहाँपुर से तीनों ज़ुबानों हिन्दी, ऊर्दू, इंग्लिश एक साथ पहली बार शहजहाँपुर मई 2026 पृष्ठ.8 मूल्य : 5 रूप्ये

बंगलादेश बना दुनिया का सबसे बड़ी फौज वाला देश

(आलम ए नजर– सदा ए बुलंद न्यूज) ग्लोबल फायरपावर इंडेक्स 2026 की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, बांग्लादेश 70 लाख से अधिक सैन्य कर्मियों के साथ दुनिया में पहले स्थान पर है। यह आंकड़ा थोड़ा चौंकाने वाला है, क्योंकि चीन के पास दुनिया की सबसे बड़ी सक्रिय सेना है।

ग्लोबल फायरपावर की मार्च 2026 की रिपोर्ट में दुनिया की सबसे बड़ी सेनाओं को उनके कुल सैनिकों की संख्या के आधार पर सूचीबद्ध किया गया है।

इसमें सक्रिय सैनिक, रिजर्व सैनिक और अर्धसैनिक बल शामिल हैं। परिणामों में देखा गया कि बांग्लादेश और वियतनाम जैसे देशों ने अपनी रिजर्व फोर्स में लाखों सैनिक शामिल कर इस लिस्ट में ऊँचा स्थान प्राप्त किया है। बांग्लादेश की एक्टिव सेना में लगभग 2 लाख सैनिक हैं, लेकिन उसके रिजर्व फोर्स और अर्धसैनिक नेटवर्क के कारण कुल सैनिक संख्या 70 लाख के करीब पहुँच जाती है, जिससे यह वैश्विक रैंकिंग में पहले स्थान पर है।

फिलिस्तीनियों के खिलाफ बिल पास होने पर,इजरायल सांसद में शराब की बोतलें खोलकर मनाया जश्न

(सदा ए बुलंद न्यूज/आलम ए नजर) इजराइल की संसद (नैसेट) ने सोमवार को फिलिस्तीनी अपराधियों को सजा देने वाला बिल पास कर दिया है। इसके तहत वेस्ट बैंक के फिलिस्तीनियों को इजराइली नागरिकों की हत्या करने या आतंकवादी गतिविधियों में शामिल होने पर सीधे मौत की सजा दी जा सकेगी। इसमें अपील का भी कोई अधिकार नहीं होगा। सजा सुनाए जाने के 90 दिनों के अंदर फांसी दी जाएगी। यह कानून राष्ट्रवादी या आतंकवादी इरादे से की गई हत्याओं पर लागू होगा। हालांकि, अदालत को विशेष कारणों के तहत उम्रकैद की सजा देने का भी अधिकार होगा। यह बिल राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इत्तमार बेन ग्विर ने आगे बढ़ाया था। बिल पास होने के बाद बेन ग्विर और दूसरे सांसदों ने संसद में ही शैंपेन की बोतल खोलकर जश्न मनाया। उन्होंने कहा, "आज इजराइल खेल के नियम बदल रहा है, जो यहूदियों की हत्या करेगा, वह सांस नहीं ले सकेगा।" बेन ग्विर ने पहले धमकी दी थी कि अगर बिल पर वोट नहीं कराया गया तो उनकी पार्टी सरकार से समर्थन वापस ले लेगी।

बिजली बिल का संकट,आम जनता को लग रहा हाई करंट

(सदा ए बुलंद न्यूज) पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पोस्ट से बिजली कंपनियों को पहले से भुगतान करने के बावजूद भी बिजली के लिए भटक रहे लोग, 'प्रीपेड पीड़ित' कहे जा रहे हैं। इनमें भी सबसे अधिक दिक़्क़तें उन आम लोगों को हो रही है जो किराये पर रह रहे हैं क्योंकि तनख़्वाह–वेतन तो एडवांस नहीं मिलता है लेकिन बिजली–किराये का पैसा पहले देना पड़ता है। और जब बिजली नहीं आती है तो बिजली की वैकल्पिक व्यवस्था के लिए मजबूर और गरीब लोगों को दूसरे साधनों का प्रबंध करने के लिए भी अलग

पड़ता है।

से ख़र्चा करना

इस समय जबकि गैस सिलेंडर न मिल पाने के कारण लोग खाना व अन्य कामों के लिए बिजली के दूसरे उपकरणों पर निर्भर हैं, ऐसे में पहले से पैसे देने के बावजूद भी बिजली नहीं मिल पाना सरकार की वो नाकामी है जिसका ख़ामियाजा जनता को भुगतना पड़ रहा है। भाजपा जाए तो बिजली आए!

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा का बड़ा आरोप: हेमंता बिस्वा सरमा की पत्नी के पास 3 पासपोर्ट हैं

(असम/सदा ए बुलंद न्यूज) ये अपराध है– इसकी कड़ी जांच होनी चाहिए– कांग्रेस जिस असम के मुख्यमंत्री की राजनीति रोटियां मुसलमानों से सिकती हों, उसकी पत्नी 2 मुस्लिम देशों के पास पोर्ट रखती हो और

तीनों पासपोर्ट अलगदृअलग देशों UAE इजिप्ट, Antigua and Barbuda के हैं'

'जिस CM की राजनीति मुस्लिमों पर चलती हो, उसकी पत्नी 2 मुस्लिम देशों के पासपोर्ट रखती है'

'क्या गृहमंत्री अमित शाह को ये जानकारी थी कि उनके दत्तक पुत्र हेमंता बिस्वा सरमा की बहू 3 पासपोर्ट रखती है' पवन खेड़ा ने तीनों पासपोर्ट की कॉपी दिल्ली में प्रेस कांफ्रेंस के दौरान स्क्रीन पर दिखाई है।

9 पुलिसकर्मियों को कोर्ट की सजा ए मौत

(तमिलनाडु –सदा ए बुलंद न्यूज) तमिलनाडु की मदुरै सेशन कोर्ट ने सोमवार को स्थानकुलम कस्टोडियल डेथ केस में 9 पुलिसकर्मियों को मौत की सजा सुनाई। कोर्ट ने इसे 'रेयरेस्ट ऑफ रेयर' बताया। कहा कि अत्यधिक बर्बरता और सत्ता के दुरुपयोग का मामला है। कोर्ट ने सभी दोषियों को मृतकों के परिजन को 1 करोड़ 40 लाख रुपए मुआवजा देने को कहा। यह मामला 2020 का है। छह साल तक सुनवाई चली। इस मामले में कुल 10 आरोपी थे। एक की कोविड के दौरान मौत हो गई।

दरअसल,19 जून 2020 को पुलिस ने मोबाइल कारोबारी पी. जयराज (59) और उनके बेटे जे. बेनिक्स (31) को हिरासत में लिया था। आरोप था कि उन्होंने लॉकडाउन के दौरान दुकान खुली रखी थी। दोनों को सथानकुलम पुलिस स्टेशन ले जाया गया।

वहां से न्यायिक हिरासत में भेजा गया, जहां कुछ ही दिनों में उनकी मौत हो गई। परिजनों ने आरोप लगाया कि दोनों के साथ थाने में रातभर मारपीट की गई। उनके शरीर पर गंभीर चोट और खून बहने के निशान थे।मद्रास हाईकोर्ट के निर्देश पर राज्य की CB&CID से लेकर CBI को सौंपी गई थी। एजेंसी ने एक इंस्पेक्टर, दो सब–इंस्पेक्टर और अन्य पुलिसकर्मियों समेत 10 आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया था।

जांच के दौरान एक महिला कांस्टेबल ने बयान दिया कि पिता–पुत्र को पूरी रात पीटा गया था। थाने में टेबल और लाठियों पर खून के निशान थे। यह गवाही मामले में अहम सबूत बनी।

संपादक की कलम से...

बहार मोहम्मद उर्फ शेख़ मौलाना शाही बहार-ए-आलम कादरी रिज़वी

जब शब्द भूख से दम तोड़ दें, आह की भी आवाज न निकले

(सदा ए बुलंद न्यूज)

इतिहास गवाह है कि मिम्बर (मस्जिद का चबूतरा) से हमेशा हौसले और हिदायत की आवाजें गूँजी हैं। लेकिन फिलिस्तीन की उस सरजमीन पर, जहाँ की मिट्टी शहीदों के खून से सुर्ख है, एक जुमे को तारीख़ ने सबसे छोटा और सबसे दर्दनाक ख़ुतबा सुना।

एक इमाम खड़ा होता है, उसका जिस्म भूख से काँप रहा है, उसकी आँखें गड्ढों में धँसी हैं, और वह कहता हैरू

''मैं बहुत भूखा हूँ, मुझमें खड़े होने की हिम्मत नहीं... और तुम भी भूखे हो। आओ, बस सफें सीधी करें और नमाज पढ़ें''

इन चंद अलफाज ने वह कह दिया जो हजारों किताबों के शब्द नहीं कह सकते थे।

यह ख़ुतबा नहीं था, यह पूरी इंसानियत की लाश पर पढ़ा गया मर्सिया (शोक गीत) था।

सोई हुई उम्माह और अरब जगत की ख़ामोशीआज जब गजा की गलियों में भूख और प्यास की नंगी नाच हो रही है, तब तेल की दौलत से लबरेज अरब देशों के दस्तरख़्वान तरह–तरह के व्यंजनों से सजे हैं।

अपराधबोध की चुप्पीः वह अरब देश, जो इस्लाम के मरकज (केंद्र) होने का दावा करते हैं, आज महज तमाशबीन बने हुए हैं। उनकी सरहदें बंद हैं, उनकी नीतियां समझौतों की बेड़ियों में जकड़ी हैं, और उनकी जुबानें कूटनीति के डर से सिली हुई हैं।

दिखावटी हमदर्दीः कुछ प्रस्ताव पास कर देना या दवाइयों के चंद डिब्बे भेज देना क्या उस जिम्मेदारी का हक अदा करता है जो खुदा ने उन्हें दी थी?

हदीस के मुताबिक, 'मुसलमान एक जिस्म की तरह हैं, अगर जिस्म के एक हिस्से में दर्द हो तो पूरा जिस्म बेचौन हो जाता है।'

लेकिन यहाँ फिलिस्तीन का हिस्सा कट कर अलग हो रहा है, और बाकी जिस्म जश्न मना रहा है।

जुल्म की दास्तानः भूख जब हथियार बन जाए फिलिस्तीन पर होने वाला जुल्म सिर्फ बमों और मिसाइलों तक सीमित नहीं है।

अब जुल्म का एक नया चेहरा सामने आया हैकृ

'सुनियोजित भुखमरी।''

माँओं का दूध सूख चुका है क्योंकि माँओं के सीने में ममता तो है पर पोषण नहीं।

बूढ़े बाप अपने बच्चों की भूख नहीं मिटा पा रहे हैं ।

वह समाज, जो कभी अपनी मेहमाननवाजी के लिए जाना जाता था, आज घास और जानवरों का चारा खाने पर मजबूर है।यह केवल एक जायोनी ताकत का जुल्म नहीं है, बल्कि उन तमाम मुस्लिम मुल्कों की मिलीभगत है जिन्होंने अपनी जमीर का सौदा अपनी कुर्सियों और तिजोरियों के बदले कर लिया है।

मुस्लिम समाज और हमारी जिम्मेदारीः क्या हमारा काम सिर्फ सोशल मीडिया पर एक पोस्ट डालना या चंद आँसू बहाना है?

जमीर की जागृतिः हमें अपने अंदर के उस इंसान को जगाना होगा जो मजलूम की चीख सुनकर बेचौन हो जाए।

आर्थिक और वैचारिक बहिष्कारः उन ताकतों को मजबूत करना बंद करना होगा जो उन गोलियों का खर्च उठाती हैं जो फिलिस्तीनी बच्चों के सीने में उतरती हैं।

सामूहिक आवाजः जब तक मुस्लिम और दुसरे समाज जो इंसानियत कायम रखना पसंद करते हैं।अपने हुक्मरानों के गिरेबान पकड़कर उनसे जवाब नहीं माँगेगा, तब तक मिम्बर से ऐसे ही 'भूखे ख़ुतबे' सुनाई देते रहेंगे।

प्रधान संपादक –
हकीम शेख़ मो बहार ए आलम कादरी रजवी

स्मार्ट मीटर से परेशानी आम जनता की जुबानी

(सदा ए बुलंद न्यूज)

लोगों ने क्या कहाः 23 मार्च को 1550 रूपए बिल दिया 7 दिन बाद लाईट काट दी गई 1 अप्रेल को 1000 रूपए एडवांस जमा किए आज 5 अप्रेल को फिर लाईट काट दी गई इस मोदी सरकार से विद्युत विभाग से SDO साहब से गुजारिश है कि कृपया ये बता दें कि माह में 15000 रूपए देना है या फिर 20000 ताकि हम सारे काम छोड़कर हम आपको पैसे देने में लग जायें कोई सुनवाई नहीं हो रही इसलिए मैं इस मीटर में आग लगा रहा हूं इसका जिम्मेदार विद्युत विभाग होगा

अरबाब ए सुखन की सजी अदबी महफिल, शायरों ने खूब अंदाज ए समां बांधा

(तिलहर शाहजहांपुर–सदा ए बुलंद न्यूज) तिलहर शाहजहांपुर बीती रात बज़्म अरबाब ए सुखन की ओर से मोहल्ला घेर चौबा स्थित गुलशन मैडम के घर महाना तरही मुशायरे का आयोजन किया गया जिस में तिलहर के अलावा शाहजहांपुर और मीरानपुर कटरा के शायरों ने शिरकत की मुशायरे की अध्यक्षता शकील तिलहरी ने की और संचालन रईस तिलहरी ने किया मुख्य अतिथि स्वर्गीय शायर हमीद तिलहरी के साहबजादे आरिफ हमीद रहे।

मुशायरे का शुभ आरंभ मसूद हसन खां ने नात ए पाक से किया।

उस्मान आबिद ने कहा–
कहीं अंधेरों का बोलबाला कही,
उजालों का सिलसिला है।
है बात सीधी सी सिर्फ रोटी ही सब बवालों का सिलसिला है।

साजिद सफदर ने सुनाया
जहाँ पे नफरत की धूप झुलसा के रख दे इंसानी बस्तियों को,
मेरी मोहब्बत की वादियों में वहीं गुलाबों का सिलसिला है।

रेहान ताबिश ने कहा–
ये रुख पे रंग ए मलाल क्यों है अयां है आंखों से क्यों उदासी,
यही तो मंजिल तलक गया है जो तेरी राहों का सिलसिला है।

फरीद तिलहरी ने सुनाया–
शजर से कट कर गिरी जो डाली लिपट के रोने लगे परिंदे,
बहुत ही मुश्किल है खत्म करना जो इन से बरसों का सिलसिला है।

शमशाद आतिफ ने कहा–

मता ए हस्ती से जब भी मैने जवाब मांगा तो हंस के बोली,
अंधेरी रातों से पूछता है कहाँ उजालों का सिलसिला है
वहीद तिलहरी ने सुनाया
कहां वो चेहरे कहां वो बातें कहां वो बीते हुए जमाने
न अब वो फूलों की कहकशां है न अब किताबों का सिलसिला है

फैजान तिलहरी ने कहा
तमाम रातों से रात को तुम जो देखते हो वो सच नहीं है
जिसे हकीक़त समझ रहे हो वो सिर्फ खुआबों का सिलसिला है

हसीब चमन ने कहा
अजब है अंजाम इस वफा का अजब जवाबों का सिलसिला है
किसी पे पत्थर बरस रहे हैं कहीं गुलाबों का सिलसिला है

शरीफ आलम ने सुनाया
थके हुए हैं तमाम जज़्बे है मेरे सीने पे बोझ इतना,
कहीं न यूं हो कि टूट जाए जो चंद सांसों का सिलसिला है।

सिफत कटरावी ने कहा–
वो जलवा आरा हैं अंजुमन में या माहताबों का सिलसिला है,
बदन से ख़ुशबू महक रही है हसीं गुलाबों का सिलसिला है।

इनके अलावा शकील तिलहरी खलीक शौक़ गुलशन जहां गुलशन रईस तिलहरी ने भी अपने कलाम पेश किए श्रोता में
रईस मन अनस खान अरमान अली महमूद हसन आमिर मियां साजिद खान राहत खान आदि गणमान्य श्रोता मौजूद रहे अंत में बज़्म के सेक्रेट्री शमशाद आतिफ ने सभी का शुक्रिया अदा किया

गजल की काविश

शायर– असलम तारिक

अमीरजादों की महफिलों में अभी शराबों का सिलसिला है,
बता दो उनको अमल ये उनका फकत अजाबों का सिलसिला है।

खिजां के मौसम की फिक्र छोड़ो भुला दो लम्हें मफारकत के,
चले भी आओ तुम्हारी खातिर हसीं गुलाबों का सिलसिला है।

ये इल्म से है जिन्हें मोहब्बत हमेशा रहते हैं जुस्तजू में,
निकाल लेते हैं वक्त अपना यही किताबों का सिलसिला है।

मोहब्बतों के सफर में मुझको यकीं है इक दिन मिलेगी मंजिल,
अभी तो हासिल है दीद उनकी अभी तो ख्वाबों का सिलसिला है।

मुअम्में जैसा है उसका चेहरा उसे है पढ़ना बहुत ही मुश्किल,
छुपा हुआ तो सवालों में ही कठिन जवाबों का सिलसिला है।

मिजाज लोगों का मुनफरिद है अजब नजारा है जिंदगी का,
कहीं पे पत्थर बरस रहे हैं कहीं गुलाबों का सिलसिला है।

तरक्कियों का बुलंदियों का कमाल जब से हुआ है जाहिर,
इसी लिए ही तो आज तारिक नए खिताबों का सिलसिला है।

चंद्रमा के लिए रवाना हुआ शाहजहांपुर की जन्नत का नाम

(शाहजहांपुर–सदा ए बुलंद न्यूज) चार अंतरिक्ष यात्री 1 अप्रैल, 2026 को नासा के एक विशाल रॉकेट में सवार होकर चंद्रमा के चारों की ओर एक बहुप्रतीक्षित यात्रा के लिए रवाना हुए, जो 50 से अधिक वर्षों में चंद्रमा का पहला मानवयुक्त फ्लाईबाई है। आर्टेमिस–2 के कमांडर रीड वाइजमैन ने पायलट विक्टर ग्लोवर, क्रिस्टीना कोच और कनाडा के जेरेमी हैनसेन के साथ ''चलो चांद पर चलते हैं!'' के नारे के साथ अंतरिक्ष में उड़ान का नेतृत्व किया। नासा के नए ओरियन कैप्सूल में सवार होने वाली यह अब तक की सबसे विविधतापूर्ण चंद्रयान टीम है, जिसमें पहली महिला, अश्वेत व्यक्ति और गैर–अमेरिकी नागरिक शामिल हैं। खास बात यह है कि इस अंतरिक्ष यान के साथ लीड कान्चेंट की छात्र जन्नत का नाम भी गया है।

जन्नत बताती हैं कि पिछले वर्ष नासा ने आम लोगों, खासकर बच्चों को आमंत्रित किया था कि वे अपना नाम मिशन के साथ भेज सकते हैं। सबमिशन के बाद उन्हें एक डिजिटल बोर्डिंग पास डाउनलोड करने को मिला था, जिसमें उनका नाम और मिशन का विवरण था। यह एक यादगार स्मृति चिह्न था। उन्होंने बताया कि यह उनके लिए गौरव की बात है कि उनका नाम चंद्रमा के चारो ओर चक्कर लगा रहा है। परीक्षा में हमेशा अव्वल आने वाली छात्रा जन्नत उच्च शिक्षा हासिल करने के बाद एक एस्ट्रोनॉट बनना चाहती हैं।

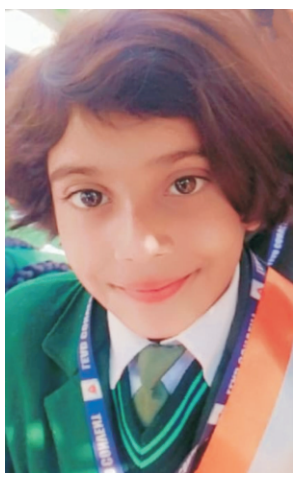

इस अवसर पर अर्थियन सोसाइटी के निदेशक एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. इरफान ह्यूमन ने इस ऐतिहासिक क्षण के बारे में बताया कि यह बच्चों और युवाओं को स्पेस एक्सप्लोरेशन से जोड़ने, उन्हें प्रेरित करने की एक मजेदार प्रक्रिया है। कई माता–पिता अपने बच्चों के नाम विशेष रूप से दर्ज करवाने की इच्छा रखते हैं, ताकि बच्चे कह सकें कि ''मेरा नाम चंद्रमा गया था!'' उन्होंने बताया कि ये नाम एक एसडी कार्ड (मेमोरी कार्ड) पर स्टोर किए गए, जो ओरियन स्पेसक्राफ्ट के अंदर रखा गया। मिशन के दौरान ये नाम चंद्रमा के चारों ओर घूमकर पृथ्वी पर वापस आएंगे। नाम रखने वाला 'राइज' नाम के एसडी कार्ड में जीरो–ग्रेविटी इंडिकेटर के अंदर रखा गया है।

उन्होंने बाताया कि आर्टेमिस–2 में सवार चारों अंतरिक्ष यात्री कक्षा में पहुंच चुके हैं। वे चंद्रमा की ओर रवाना होने से पहले लगभग 25 घंटे तक पृथ्वी की परिक्रमा करेंगे। वे चंद्रमा से कई हजार मील आगे निकल जाएंगे, यू–टर्न लेंगे और फिर सीधे वापस आ जाएंगे। चंद्रमा के चारों ओर चक्कर लगाने के अलावा इस बार चंद्रमा पर चलने के लिए रुकने की कोई योजना नहीं है, बस 10 दिनों से भी कम समय में एक त्वरित यात्रा पूरी हो जाएगी।

सेहत सलाह

लू किसे कहते हैं?

(सदा ए बुलंद न्यूज

(Heatwave/Loo) गर्मियों (मई–जून) में उत्तर–पश्चिम भारत में चलने वाली अत्यंत गर्म, शुष्क और धूलभरी हवाएं हैं, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इनका तापमान से अधिक हो सकता है। यह शरीर से अत्यधिक पानी और नमक सोख लेती हैं, जिससे निर्जलीकरण (कमीलकतंजपवद), कमजोरी, चक्कर आना, तेज बुखार और कभी–कभी मौत (हीट स्ट्रोक) का कारण बनती हैं।

लू की प्रमुख विशेषताएं और लक्षण:

प्रकृतिः यह दिन के समय चलने वाली तेज और गर्म हवाएं हैं।

शारीरिक प्रभावः शरीर में पानी की भारी कमी (निर्जलीकरण), थकान, सिरदर्द और मांसपेशियों में ऐंठन।

गंभीर लक्षणः उल्टी, दस्त, बेहोशी और शरीर का तापमान बहुत अधिक (104°F या 40°C से ऊपर) हो जाना।

जोखिम समूहः बुजुर्ग, बच्चे, गर्भवती महिलाएं और बाहर काम करने वाले लोग सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं।

बचाव के उपायः

हाइड्रेटेड रहें: पर्याप्त मात्रा में पानी, ओआरएस (ORS) नींबू पानी, लस्सी या छाछ पीते रहें, भले ही प्यास न लगी हो।

बाहर जाने से बचें: दोपहर 12 बजे से 4 बजे के बीच घर से बाहर न निकलें।

सुरक्षाः बाहर जाते समय टोपी, छाता, चश्मा और सूती कपड़े पहनें।

ठंडा वातावरणः पंखे, कूलर का उपयोग करें और ठंडे पानी से स्नान करें लू को कैसे ठीक करें? लू लगने (हीट स्ट्रोक) पर व्यक्ति को तुरंत छायादार ठंडी जगह ले जाएं, कपड़े ढीले करें और शरीर पर ठंडा पानी छिड़कें या गीली पट्टी रखें। ओआरएस (ORS) नींबू पानी, आम पना, या नारियल पानी पिलाएं। ज्यादा गंभीर होने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें, क्योंकि यह एक मेडिकल इमरजेंसी हो सकती है।

लू लगने के मुख्य उपचारः
(Home Remedies for Heatstroke):

शरीर को ठंडा करें: सबसे पहले पीड़ित को पंखे या एसी (AC) में लिटाएं। ठंडे पानी से स्पंजिंग करें या ठंडे पानी में भीगी चादर शरीर पर डालें।

तरल पदार्थ का सेवनः नींबू पानी, ओआरएस का घोल, नारियल पानी, या छाछ का सेवन कराएं ताकि डिहाइड्रेशन (पानी की कमी) दूर हो।

प्याज का उपयोगः कच्चे प्याज का रस तलवों पर रगड़ें और आम पना में भुना हुआ प्याज मिलाकर पिएं, यह शरीर को ठंडक देता है।

आम पनाः कच्चा आम उबालकर, उसमें काला नमक, जीरा और चीनी मिलाकर पीने से लू में बहुत आराम मिलता है।

खान–पानः तरबूज, खरबूजा, खीरा और ककड़ी जैसे पानी से भरपूर फलों का सेवन करें।

आरामः पीड़ित को आराम करने दें और धूप में बिल्कुल न निकलने दें।
तुरंत अस्पताल कब जाएं?
तेज बुखार (104°F या 40°C से ज्यादा)।
बेहोशी या भ्रम की स्थिति।
उल्टी या जी मिचलाना।
त्वचा का बहुत गर्म और सूखा होना।

लू लगने से शरीर में कौन सी कमी आ जाती है? ऐसा होने के कारण शरीर में नमक और पानी की कमी हो जाती है जिसके कारण शरीर डिहाइड्रेट हो जाता है। लू लगने की स्थिति में शरीर का तापमान लगभग 105°F या इससे अधिक हो जाता है और शरीर में कुछ जटिलताएं उत्पन्न हो जाती है।

हकीमः शेख मौलाना शाही

मुस्लिम पिता अब्दुल हक खान अपनी हिंदू बेटी नंदीनी सिमोलिया का कन्यादान करेंगे

(सदा ए बुलंद न्यूज/ राजगढ़) मध्य प्रदेश के राजगढ़ में मुस्लिम पिता अब्दुल हक खान अपनी हिंदू बेटी नंदीनी सिमोलिया का कन्यादान करेंगे। राजगढ़ के ओल्ड कलेक्ट्रेट रोड स्थित पुरानी बस स्टैंड के पास रहने वाले अब्दुल हक खान बताते हैं कि यूं तो नंदीनी उनकी साली हैं, मगर उन्होंने उसे बेटी मानकर पाला है।

दरअसल, नंदीनी के पिता रतिराम की साल 2010 में सड़क हादसे में मौत हो गई थी। इसके बाद साल 2012 में मां फूलवती का भी निधन हो गया। माता–पिता के गुजर जाने के बाद नंदीनी की बड़ी बहन प्रीति (आयशा) ने अब्दुल हक खान से लव मैरिज की और नंदीनी को अपने साथ ससुराल ले आई। तभी से नंदीनी इसी परिवार में पली–बढ़ी और पढ़ाई की।

अब नंदीनी की शादी 4 अप्रैल 2026 को ग्वालियर के अंश परमार के जिंदाबाद हाउस में धूमधाम से होगी। इस दौरान दोनों धर्मों के करीब 1500 से 2000 लोगों के भोजन की व्यवस्था की जा रही है। अब्दुल हक खान ने कहा कि नंदीनी से उनका भले ही खून का रिश्ता ना हो लेकिन प्यार, जिम्मेदारी और अपनापन से उन्होंने इस रिश्ते को अपना बनाया।

अब्दुल हक खान के अनुसार, नंदीनी ने 12वीं तक की पढ़ाई केंद्रीय विद्यालय से की और आगे की पढ़ाई ग्वालियर के कॉलेज से पूरी की। इस दौरान नंदीनी और ग्वालियर निवासी अंश परमार की दोस्ती हुई, जो बाद में प्यार में बदल गई। जब नंदीनी ने अपने रिश्ते के बारे में अब्दुल हक खान को बताया, तो उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार किया और प्रेम विवाह की मंजूरी दे दी। अब दोनों का विवाह हिंदू रीति–रिवाजों के अनुसार संपन्न होगा।

अब और कोई सीजफायर नहीं, कोई बातचीत नहीं या तो जीत या शहादत: ईरान

(आलम ए नजर– सदा ए बुलंद न्यूज) ईरान की सरकारी मीडिया के मुताबिक ईरान ने अमेरिका और इजरायल के लिए बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है और चेतावनी देते हुए मोजतबा खामेनेई ने व्हाइट हाउस से कहारू "आपने सीजफायर की भीख मांगी ताकि आप फिर से लोड कर सकें कृ हमने आपकी कमजोरी को सामने आने दिया।"

"आप दो हफ्ते में जो भी लाएंगे, हम दो दिन में उसे मिटा देंगे। हमारी मिसाइल और ड्रोन की पावर 10 साल तक खत्म नहीं होगी। हर नुकसान के लिए, हम इसे हजार बार बदल देंगे।"

"हम इंतजार नहीं करेंगे। तेल अवीव पर पूरी ताकत से हमला किया जाएगा कृ कोई भी एनर्जी सेंटर चालू नहीं रहेगा।"

आखिरी चेतावनीः "अब और कोई सीजफायर नहीं। कोई बातचीत नहीं। या तो जीत या शहादत।" रिपोर्ट्स का दावा है कि बड़े टारगेट के लिए 10,000 तक मिसाइलें तैयार हैं।"अगर आप लौटते हैं, तो हम लौटते हैं, और भगवान हमारे साथ है।

सागर वारसी मेमोरियल ट्रस्ट के तहत हुआ महफिल ए मुशायरा व सम्मान समारोह

शायर अजीम शाहजहांपुरी व उर्दू लेखक इरफान अहमद को अवार्ड से नवाजा गया

रिपोर्टः राशिद हुसैन (सदा ए बुलंद न्यूज/शाहजहांपुर) बीती रात मोहल्ला एमन जई, जलाल नगर की अदबी फजा उस वक़्त और भी महक उठी जब मरहूम उस्ताद शाइर सागर वारसी के मकान पर सागर वारसी मेमोरियल ट्रस्ट के अंतर्गत शानदार मुशायरा व सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता लखनऊ से आए साजिद ख़ैराबादी ने की। जबकि मुख्य अतिथि अशफाक उल्ला ख़ां और विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर गुलाम अशरफ क़ादरी, डॉ. मंसूर अहमद सिद्दीक़ी व तैय्यब अली ख़ां की मौजूदगी थे। इस अवसर पर ट्रस्ट की ओर से उर्दू अदब की ख़दिमात के लिए सीनियर शायर अजीम शाहजहांपुरी को "सागर वारसी अदबी अवार्ड –2026" तथा अफसाना निगार इरफान अहमद अंसारी को "सआदत हसन मंटो अदबी अवार्ड– 2026" से नवाजा गया। उन्हें शाल ओढ़ाकर और प्रशस्ति–पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

इसके बाद महफिल ए मुशायरे में साजिद ख़ैराबादी, अजीम शाहजहांपुरी, कदीर मसरूर, वसीम मीनाई, असगर यासिर, हमीद ख़जिर, ज्ञानेंद्र मोहन ज्ञान, मजहर रामपुरी, शाहिद रजा, हसीब चमन, खलीक़ शौक़, राशिद हुसैन राही, सैयद शारिक़ अक्स, गुलिस्तां ख़ान एडवोकेट, फहीम बिस्मिल, शाहीना ख़ातून शबनम, सबा नक़वी, डॉ. वाजिद तिलहरी, इशरत सगीर, अबू शब्बर ख़ैराबादी , डॉ. शिफा तिलहरी, फैसल फैज, इब्ने हसन, विकास सोनी 'ऋतुराज', रेहान क़ादरी, फरमान चिश्ती आदि शायरों ने अपनी गजलों से श्रोताओं को आनंदित किया।

इस अवसर पर मोहम्मद नक़ी इदरीसी, ख़लीक़ उजज्मां ख़ां, सुधाकर तिवारी एडवोकेट, पार्षद तालिब खां, इमरान सईद ख़ां, मो. लतीफ, गुलरेज ख़ां, आरिफ ख़ां, दिलशाद अहमद खां, अफजल, सादिक़ अली, फुरक़ान ख़ां, यूसुफ ख़ां, मुनीर इदरीसी, निहाल अहमद ख़ान, शमीम अहमद ख़ान आदि गणमान्य उपस्थित रहे।

अंत में कार्यक्रम के संयोजक सैयद शारिक अक्स और परवेज अहमद ख़ां उर्फ अच्छे मियां ने श्रोताओं का शुक्रिया अदा किया।

काजी रशीद जफर का इंतकाल, सुपुर्दे खाक

रिपोर्ट– राशिद हुसैन (शाहजहांपुर/सदा ए बुलंद न्यूज)

काजी रशीद उज जफर खां का लंबी बीमारी के बाद इंतकाल हो गया। उनके इंतकाल की खबर से लोगों में शोक छा गया। मंगलवार को पैतृक कब्रिस्तान में उन्हें गमगीन माहौल में सुपुर्दे खाक कर दिया गया।महानगर के मोहल्ला ख्वाजा फिरोज में रहने वाले काजी रशीद उज जफर खां पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे। सोमवार शाम को अचानक उनकी तबीयत बिगड़ गई और उनका इंतकाल हो गया। 80 वर्षीय काजी रशीद उज जफर अपने पीछे पत्नी नाजरा बेगम, दो पुत्रों जाजिब खां, मोअज्जम खां और विवाहित पुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। स्वास्थ्य विभाग से सेवानिवृत्त होने के बाद 1995 में उन्हें नायब काजी बनाया गया। वह मोहल्ले में काजी वाली मस्जिद में इमामत भी करते थे। सोमवार सुबह 10 बजे उनकी नमाजे जनाजा हाफिज मोहम्मद उवैस चिश्ती ने अदा कराई। इसके बाद जनाजे को कंधा देकर कब्रिस्तान तक लाया गया। सोगवार माहौल में उन्हें सुपुर्दे कर दिया गया।

उ नके इंतकाल पर शहर काजी सैयद सैफ हसन, शिक्षक निसार हुसैन खां, फरीदी खान, सईद जफर, लतीफ रशीदी, तालिब खां, हफीज उल कदर, फरीद खां, मंजूर हसन, फैसल रजा कादरी, सूफी खलीक अहमद साबरी, नायब काजी मोहम्मद मोनिस खां, गजनफर खां, तारिक खां, राशिद हुसैन, हनीफ खां, आसिम खां, आमिर खां, खावर खां, इमरान खान आदि थे।

एक नज़र में

इजरायल–अमेरिका और ईरान युद्ध से सिर्फ गैस तेल से ही नहीं, शुद्ध हवाओं दवाओं को भी तरसेगी दुनिया

सदा ए बुलंद न्यूज) इजरायल–अमेरिका और ईरान युद्ध के चलते दुनिया पर सिर्फ तेल और गैस का संकट ही नहीं पैदा हुआ है, बल्कि अब कई देशों में दवाओं और खाद्य पदार्थों का भी भारी संकट खड़ा हो गया है। इससे लाखों लोगों का जीवन खतरे में पड़ गया है। इस विकराल समस्या को लेकर सहायता संगठनों ने चेतावनी दी है कि मध्य पूर्व में चल रहा युद्ध उनके लिए दुनिया भर में जरूरतमंद लाखों लोगों तक भोजन और दवाइयां पहुंचाने की क्षमता को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। यदि हिंसा जारी रही तो लोगों की पीड़ा और गहरी हो जाएगी।

ब्वायफ्रेंड के साथ मुस्लिम बुर्का पहन कर हिंदू ने सर्राफ की दुकान से नकली पिस्टल दिखाकर करीब 3.6 लाख रुपये लूटे

(सदा ए बुलंद न्यूज – अयोध्या)अयोध्या में बुर्का पहनकर ज्वेलरी शॉप में लूट करने वाली युवती हिंदू निकली। पुलिस ने गुरुवार देर रात युवती पायल (25) और उसके साथी राहुल (27) को गिरफ्तार कर लिया। घटना रुदौली कोतवाली क्षेत्र के कोठी बाजार की है। गुरुवार दोपहर करीब 12:30 बजे पायल बुर्का पहनकर दुकान में घुसी और नकली पिस्टल दिखाकर करीब 3.6 लाख रुपये के सोने के हार और चेन लूट लिए। वारदात के समय राहुल थोड़ी दूरी पर बाइक लेकर खड़ा था। लूट के बाद पायल उसके साथ फरार हो गई। पूरी घटना दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई। बाइक नंबर के आधार पर पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया।

सभी देश पूरी ताकत से इस पागल ट्रम्प को रोको: पूर्व आईएईए प्रमुख एल बरदेई

(आलम ए नजर– सदा ए बुलंद न्यूज) IAEA के पूर्व चीफ ने खाड़ी देशों और यूएन से ट्रंप को रोकने की अपील की। उन्होंने कहा कि इस पागल को रोको। पूर्व आईएईए प्रमुख एल बरदेई ने संघर्षों के बढ़ने की चेतावनी देते हुए फारस की खाड़ी के देशों और संयुक्त राष्ट्र से ट्रंप को रोकने का आह्वान किया और कहारू इस पागल को रोकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दें, इससे पहले कि वह पूरे क्षेत्र को आग की लपटों में जला दे।

घर में जेवर छोड़ दिए गैस सिलेंडर चुरा ले गए चोर

(सदा ए बुलंद न्यूज) देश में LPG संकट के बीच चोरों का भी टारगेट बदल गया है. अब चोरों के निशाने पर कीमती गहने नहीं बल्कि सिलेंडर है. हाल ही में प्रयागराज से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है जहां चोर जेवरात और अन्य चोर घर में घुसे, कीमती सामान नहीं सिर्फ गैस सिलेंडर उठाकर ले गए. सुबह जब परिवार के लोग उठे तो रसोई में रखा सिलेंडर गायब देखकर हैरान रह गए.

तीसरा कक्षा की छात्रा को 50 साल के शिक्षक ने दुष्कर्म करके गर्भवती बनाया

(सदा , बुलंद न्यूज) झारखंड के चतरा जिले में तीसरी कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा गर्भवती पाई गई है। इसके बाद से पूरे इलाके में बवाल मचा हुआ है। छात्रा ने बताया कि स्कूल में एक शिक्षक उसके साथ दुष्कर्म था। आरोपी शिक्षक की उम्र 50 साल है। मामला एक अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका प्राथमिक विद्यालय का है, जहां पदस्थ शिक्षक शंकर प्रसाद ने अपनी मर्यादा को तार–तार करते हुए मासूम बच्ची को हवस का शिकार बनाया। इस घिनौने कृत्य का खुलासा तब हुआ, जब नाबालिग छात्रा गर्भवती पाई गई।

अल मुश्किल कुशा खानकाह नेशनल सोसायटी का जबरदस्त इस्लाही और फरोग ए तालीमी प्रोग्राम

जश्न नन्हें मुन्ने नमाजी–मुकाबला में फर्स्ट मो.अफजल, सेकेंड असरा, थर्ड गुलाम गौस ने इनाम में मारी बाजी

(इस प्रोग्राम में 5–12 साल के बच्चों ने दुनिया और दीनी जनरल नॉलेज के लिए पार्टिसिपेट किया था और बहुत ही अच्छे तरीके से तैयारियां करके सवाल का जवाब दिया जिससे बच्चों को नमाज इंसानियत कामयाबी की मंजिल व देश भक्त का जज्बा हौसला हिम्मत सीखाया गया)

(सदा ए बुलंद न्यूज/गोला लखीमपुर खीरी) अल मुश्किल कुशा–ख़ानकाह नेशनल सोसायटी की जानिब से ईमान ए बेदारी मुहिम के तहत् सैकड़ों बच्चों ने गोला लखीमपुर मोहल्ला ईदगाह इस्लामिया जुनियर हाई स्कूल में जश्न ए नन्हें मुन्ने नमाजी मुकाबला में हिस्सा लिया। इस प्रोग्राम में शहर ब्लाक और 5 गांव के सैकड़ों नन्हें मुन्ने बच्चों ने हिस्सा लिया। प्रोग्राम में 40 दिनों से बच्चे दीन इस्लाम और दुनियावी जनरल नॉलेज के सवाल और जवाब के पर्चे खानकाह की तरफ से तैयार करके बच्चों को मुहैय्या करा दिये थे। जिसको बच्चों ने खूब अच्छे से हिफ्ज किया और पांच जजों की पीठ द्वारा पूछे जाने पर सवाल के जवाब दिए। और जो बच्चों ने 40 दिनों तक बगैर नागा किए पांच वक्त नमाजें कसरत से पढ़ी उन्हें सात दर्जों के हिसाब से रेंक पोजीशन पर ईनाम दिये गये।

इन बच्चों को ईनाम मिलाः– फर्स्ट मो.अफजल, को रेंजर साईकिल सेकेंड असरा, कुलर थर्ड गुलाम गौस स्टडी टेबल और सादिया, शाहिद, शिफा, आफरीन,सय्यान,तजीना,सिदरा,मेहताब, जैनब,फिजा,वजीहा,निशा,साहिल, शाइस्ता,सोहान, हमज़ा, तरन्नुम,समाइरा को टिफिन बॉक्स पानी की बोतलें वितरण किये गये इस प्रोग्राम में बच्चों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और बेहतरीन मेहनत की। राष्ट्रीय सदर शेख़ मौलाना शाही ने कहा कि सोसायटी ऐसा कार्यक्रम करवा रही है जिससे हमारे देश के बच्चे होनहार शिक्षित हुनरमंद बनें और अपने से बड़ों का आदर सम्मान करें मां बाप की फरमाबरदारी करें और ये प्रोग्राम मुल्क के हर राज्य शहर कस्बों में लगातार किया जा रहा है बच्चों को कामयाब बनाने के लिए डाक्टर इंजीनियर वकील वैज्ञानिक और तकनीकी ढांचे को मजबूत करने के लिए बुनियादी स्तर से ये सीखाने की कोशिश की जाती है कि आप अपने मां बाप टीचर की आज्ञा का पालन करेंगे तो हर लाईन में कामयाब होने मोबाइल से हर हाल में दूर रहने को बताया गया। इस प्रोग्राम में बच्चों ने पढ़ाई–लिखाई और किताबों को पढ़ने के लिए अच्छी तैयारी की।

सोसायटी साल में चार प्रोग्राम जश्न ए वालिदैन, जश्न ए मियां बीवी और जश्न ए नन्हें मुन्ने नमाजी मुकाबला और जश्न ए सम्मान समारोह करवाती है इन आयोजनों में सभी धर्म के लोग शामिल रहते हैं। ऐसे प्रोग्राम्स से हमारे समाज की बड़ी छोटी बुराईयां बुनियादी स्तर से जड़ से खत्म हो रही हैं। और बच्चे जो हमारे देश के भविष्य हैं उन्हें पढ़ाई की तरफ आकर्षित किया जा रहा है और बच्चों के अंदर राष्ट्रीय एकता सभ्यता अखंडत संप्रभुता का संचार विकास हो रहा है। प्रोग्राम में राष्ट्रीय अध्यक्ष बानी प्रधान संपादक– मौलाना शाही शेख़ मो. बहार ए आलम कादरी ने सभी बच्चों को ईनाम तकसीम किए।

ब्लाक प्रमुख मौलाना शाहबाज रजा हाजी राजा जफर,जिला पंचायत सदस्य वारिस अली अंसारी,सैयद मोहम्मद आसिफ जिला ताइक्वांडो एसोसिएशन के सचिव,प्रिंसिपल जुबेर खान, मैनेजर – वकारुल्लाह ख़ान,मास्टर सबील अहमद, मास्टर नदीम खान, मास्टर शफी अहमद,मास्टर सोहेल खान मौलाना अब्दुल गनी मौलाना अफसर रजा बरकाती शेख़ मौलाना शाही इंतजामिया कमेटी में रेहान दानाई,कदीर ख़ान, शाहजाद खान, शाहबाज रजा, मो. मुईद आदि लोग शामिल हुए

क्या इजरायल में कयामत आने वाली है, पहले लाखों कौवों मंडराना अब मधुमक्खियों का हमला

(आलम ए नजर– सदा ए बुलंद न्यूज) इजरायल बीते कुछ वर्षों से अलग–अलग देशों के साथ युद्ध में उलझा है लेकिन हालिया दिनों में एक नई टेंशन देश में देखी जा रही है। दक्षिण इजरायल के नेतिवोट शहर में मधुमक्खियों के बड़े झुंड देखे गए हैं, जिन्होंने गाड़ियों और आम लोगों पर हमले किए हैं। जहरीली मधुमक्खियों ने पूरे पूरे शहर पर हमला बोल दिया। ऐसा देखा गया है कि जैसे मधुमक्खियों की बारिश हो रही है। सोशल मीडिया यूजर्स ने इसे एक बुरे संकेत की तरह देखा है। इससे पहले तेल अवीव में कौवों के बड़े–बड़े झुंड देखे गए थे। उन्होंने बड़े हमले करके हाई–वे पर जाम लगा दी थी। सोशल यूजर्स का दावा है कि यह तबाही के संकेत हैं, जिसका जिक्र बाइबिल और कुरान में मिलता है।

दक्षिणी इजरायल के नेतिवोट शहर पर हजारों लाखों मधुमक्खियों के हमला करने के वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आए हैं। इससे ना सिर्फ आम लोगों को मुश्किल का सामना करना पड़ा रहा है बल्कि कुछ विमानों को भी उड़ान भरने में दिक्कत हुई है। इजरायली अधिकारियों को इससे पार पाने के लिए विशेष टीमें बनाने का फैसला लेना पड़ा है। क्या ये कुदरती अजाब नहीं है। इजरायल के हमले में मारे गए हजारों मासूमों के साथ फिलिस्तीनियों और ईरानियों की आह और बद्दुआ नहीं है। ऐसे लाखों सवाल सोशल मीडिया पर अपडेट किए जा रहे हैं। लेकिन इजरायल को ऐसे संकेत समझ नहीं आ रहे।

मामूड़ी ककरा में जब मर्जी होती है तब नगर निगम के अधिकारी गरीबों के घरौंदों पर जेसीबी चलाने लगते हैं

सदा ए बुलंद न्यूज/शाहजहांपुर) नगर निगम के अधिकारी एक बार फिर अपनी मनमानी पर उतर आए मामूडी ककरा स्थित पुरानी खाली पड़ी रेलवे लाइन पर कुछ गरीब बेघर परिवारों ने बास बल्ली पन्नी तानकर अपने आशियाने बना लिए,नाला खुदाई के नाम पर नगर निगम के कर्मचारी जेसीबी लेकर उन मकानों को गिराने लगे सूचना पाकर जिलाध्यक्ष रजनीश गुप्ता अपने दल बल के साथ मौके पर पहुंच गए और इस कार्यवाही का कड़ा विरोध करते हुए कहा कि इस समय लगातार मौसम खराब हो रहा है किसी भी समय बारिश होने लगती है ऊपर से बैगर सोचे समझे नगर निगम के अधिकारी इन घरों को गिराने में लगे ये गरीब लोग इस मौसम में कहा जाएंगे।

उन्होंने कड़े लहजे में कहा कि अभी पिछली गलती हम भूले नहीं दरी और माइक हर समय गाड़ी में पड़ा रहता है जरा दिल और दिमाग से काम करो।विकास के नाम पर जनता को तंग मत करो रजनीश गुप्ता ने संबंधित अधिकारी से फोन पर वार्ता कर इन परिवारों के रहने के लिए उचित प्रबंध न होने तक इस कार्यवाही को रोकने की मांग की जिस पर जेसीबी कार्यवाही को रोक दिया गया।

इस मौके पर प्रमुख रूप से अनिल श्रीवास्तव,गौरव त्रिपाठी, वकार आलम,अफजाल खान,सईद अंसारी,प्रत्यूष मिश्रा मौजूद रहे।

جس سمت دیکھئے وہ علاقہ حضور تاج الشریعہ کا ہے

24,25 اپریل 2026 کو بڑی دھوم دھام سے بریلی میں منایا جائے گا عرسِ تاج الشریعہ

(صدائے بُلند نیوز) جہاں مالک قدیر نے آپ کو، نامور آباؤ اجداد اور معزز ومقدس قبیلہ میں پیدا فرمایا وہیں آپ کی اولاد اور خاندان میں بھی بے شمار بے مثال ولاجواب افراد پیدا فرمائے۔ استاد زمن، حجۃ الاسلام، مفتء اعظم، مفسر اعظم، حکیم الاسلام، ریحان ملت، صدر العلماء، امین شریعت جس کسی کو دیکھ لیجئے ہر ایک اپنی مثال آپ ہے۔ انہی میں ایک نام سرسبز وشاداب باغِ رضا کے گل شگفتہ، روشن روشن فلک رضا کے نیر تاباں قاضی القضاۃ فی الہند، جانشین مفتء اعظم، حضور تاج الشریعہ حضرۃ العلام مفتی محمد اختر رضا خاں قادری ازہری دام ظلہ علینا کا بھی ہے۔

حضور تاج الشریعہ دام ظلہ، علینا مفسر اعظم ہند حضرت علامہ مفتی محمد ابراہیم رضا خاں قادری جیلانی کے لخت جگر، سرکار مفتء اعظم ہند علامہ مفتی مصطفیٰ رضا خاں قادری نوری کے سچے جانشین، حجۃ الاسلام حضرت علامہ مفتی محمد حامد رضا خاں قادری رضوی کے مظہر اور سیدی اعلیٰ حضرت امام اہلسنّت مجدد دین وملت الشاہ امام احمد رضا خاں قادری برکاتی بریلوی کی برکات وفیوضات کا منبع اور ان کے علوم وروایتوں کے وراث وامین ہیں۔

ان عظیم نسبتوں کا فیضان آپ کی شخصیت میں اوصاف حمیدہ اور اخلاق کریمانہ کی صورت میں جھلک رہا ہے۔ استاذ الفقہاً حضرت علامہ مفتی عبد الرحیم صاحب بستوی دامت برکاتہم القدسیہ حضور تاج الشریعہ دام ظلہ، علینا پر ان عظیم ہستیوں کے فیضان کی بارشوں کا تذکرہ ان الفاظ میں کرتے ہیں: ''سب ہی حضرات گرامی کے کمالات علمی وعملی سے آپ کو گراں قدر حصہ ملا ہے۔ فہم و ذکا، قوت حافظہ وتقویٰ سیدی اعلیٰ حضرت سے، جودت طبع ومہارت تامہ (عربی ادب) میں حضور حجۃ الاسلام سے، فقہ میں تبحر و اصابت سرکار مفتء اعظم ہند سے، قوت خطابت وبیان والد ذی وقار مفسر اعظم ہند سے یعنی وہ تمام خوبیاں آپ کو وارثتہً حاصل ہیں جن کی رہبر شریعت وطریقت کو ضرورت ہوتی ہے۔ ''] پیش گفتار، شرح حدیث نیت/صفحہ:

ولادت باسعادت: حضور تاج الشریعہ دام ظلہ، علینا کی ولادت باسعادت ۲۶/محرم الحرام ھ بمطابق ۲/فروری ۱۹۷۳ء

بروز منگل ہندوستان کے شہر بریلی شریف کے محلّہ سوداگران میں ہوئی۔

اسم گرامی: آپ کا اسم گرامی ''محمد اسماعیل رضا'' جبکہ عرفیت ''اختر رضا'' ہے۔ آپ اختر تخلص استعمال فرماتے ہیں۔ آپ کے القابات میں تاج الشریعہ، سلطان الفقہاء، جانشین مفتء اعظم، شیخ الاسلام و المسلمین زیادہ مشہور ہیں۔

شجرہ نسب: اعلیٰ حضرت امام اہلسنّت تک آپ کا شجرہ نصب یوں ہے۔ محمد اختر رضا خاں قادری ازہری بن محمد ابرہیم رضا خاں قادری جیلانی بن محمد حامد رضا خاں قادری رضوی بن امام احمد رضا خاں قادری برکاتی بریلوی آپ ۵/ بھائی اور ۳/ بہنیں ہیں۔ ۲/ بھائی آپ سے بڑے ہیں۔ ریحان ملت مولانا ریحان رضا خاں قادری اور تنویر رضا خاں قادری (آپ بچپن ہی سے جذب کی کیفیت میں غرق رہتے تھے بالآخر مفقود الخبر ہوگئے) اور ۲/ آپ سے چھوٹے ہیں۔ ڈاکٹر قمر رضا خاں قادری اور مولانا منان رضا خاں قادری

تعلیم و تربیت: جانشی مفتء اعظم حضور تاج الشریعہ دام ظلہ، علینا کی عمر شریف جب/سال،/ ماہ اور/ دن ہوئی تو آپ کے والد ماجد مفسر اعظم ہند حضرت ابراہیم رضا خاں جیلانی رضی اللہ تعالی عنہ نے تقریب بسم اللہ خوانی منعقد کی۔ اس تقریب سعید میں ''یادگار اعلی حضرت دار العلوم منظر الاسلام'' کے تمام طلبہ کو دعوت دی گئی۔ رسم بسم اللہ نانا جان تاجدار اہلسنّت سرکار مفتء اعظم ہند محمد مصطفیٰ رضا خاں نوری نے ادا کرائی۔

حضور تاج الشریعہ دام ظلہ، علینا نے ''ناظرہ قرآن کریم'' اپنی والدہ ماجدہ شہزادی ءمفتی اعظم سے گھر پر ہی ختم کیا، والد ماجد سے ابتدائی اردو کتب پڑھیں۔ اس کے بعد والد بزرگوار نے ''دار العلوم منظر الاسلام'' میں داخل کرا دیا، درس نظامی کی تکمیل آپ نے منظر الاسلام سے کی۔ اس کے بعد ۱۹۶۳ء میں حضور تاج الشریعہ دام ظلہ، علینا ''جامعۃ الازہر'' قاہرہ، مصر تشریف لے گئے۔ وہاں آپ نے ''کلیہ اصول الدین'' میں داخلہ لیا اور مسلسل تین سال تک ''جامعہ ازہر، مصر'' کے فن تفسیر وحدیث کے ماہر اساتذہ سے اکتساب علم کیا۔ تاج الشریعہ ۱۹۶۶ء/۱۹۸۶ھ میں جامعۃ الازہر سے فارغ ہوئے۔ اپنی جماعت میں اول پوزیشن حاصل کرنے پر آپ کو اس وقت کے مصر کے صدر کرنل جمال عبد الناصر نے ''جامعہ ازہر ایوارڈ'' پیش کیا اور ساتھ ہی سند سے بھی نوازے گئے۔

بحوالہ: مفتء اعظم ہند اور ان کے خلفاء (/صفحہ:۱۵۰/جلد:۱)

انڈیا کو اُن ممالک کی فہرست میں شامل کیا جائے جہاں مذہبی آزادی کے حوالے سے 'خاص تشویش' پائی جاتی ہے۔

(صدائے بُلند نیوز عالمی خبر)

آر ایس ایس خود کو سماجی اور ثقافتی تنظیم کہتی ہے لیکن رپورٹ کے مطابق زمینی حقائق کچھ اور بتاتے ہیں امریکی کمیشن برائے بین الاقوامی مذہبی آزادی (یو ایس سی آئی آر ایف) کی سالانہ رپورٹ نے ایک بار پھر انڈیا میں مذہبی آزادی کی صورتحال پر دنیا بھر میں بحث چھیڑ دی ہے۔ رپورٹ میں امریکی حکومت کو سفارش کی گئی ہے کہ انڈیا کو اُن ممالک کی فہرست میں شامل کیا جائے جہاں مذہبی آزادی کے حوالے سے 'خاص تشویش' پائی جاتی ہے۔

کمیشن نے کچھ اداروں اور تنظیموں پر پابندیاں عائد کرنے کی بھی تجویز دی ہے، جن میں راشٹریہ سویم سیوک سنگھ (آر ایس ایس) اور انڈیا کی خفیہ ایجنسی ریسرچ اینڈ اینالیسس ونگ (را) بھی شامل ہے۔

دوسری جانب انڈین وزارتِ خارجہ نے رپورٹ کو 'سیاسی ایجنڈے پر مبنی' قرار دیتے ہوئے مسترد کر دیا ہے۔

رپورٹ میں کہا گیا ہے کہ حالیہ برسوں میں انڈیا میں مذہبی اقلیتوں کے خلاف امتیازی قوانین اور اقدامات میں اضافہ ہوا ہے۔ کمیشن نے ایف سی آر اے، یو اے پی اے، سی اے اے اور این آر سی کے ساتھ ساتھ وقف (ترمیمی) ایکٹ پر بھی تنقید کی ہے۔

رپورٹ کے مطابق یہ قوانین بالخصوص مسلم اور مسیحی برادریوں کو متاثر کرتے ہیں۔ اس کے مطابق 'کئی ریاستوں میں تبدیلی مذہب (اینٹی کنورژن) کے قوانین کو سخت بنایا گیا ہے، طویل قید کی سزاؤں کا نفاذ ہوا ہے، اور گائے کے تحفظ کے نام پر ہجوم کے تشدد کے واقعات بڑھے ہیں۔'

رپورٹ میں مہاراشٹر، اوڈیشا (اڑیسہ) اور اتر پردیش میں فرقہ وارانہ تشدد کا بھی حوالہ دیا گیا ہے، جہاں وشوا ہندو پریشد جیسی کچھ سخت گیر ہندو تنظیموں کو اس تشدد سے جوڑا گیا ہے۔

مुफ्ती एक गिरता हुआ वकार

मुजीब रज़ा तहसीनी

(इल्म ए चिराग – सदा ए बुलंद न्यूज)

दो–तीन दशक पहले हाल यह था कि पूरे मुल्क में कुछ गिने–चुने दारुल–इफ्ता होते थे और कुछ खास शख्सियतें ही कार–ए–इफ्ता अंजाम देती थीं। मुफ्तियान–ए–किराम बाकायदा दारुल–इफ्ता में बैठते, डाक के जरिये सवालात आते, फिर तरतीब के साथ उनके जवाब तहरीर किए जाते, नकलें तैयार होतीं और डाक के जरिये मुस्तफ्ती तक जवाब पहुंचाया जाता। ताख़ीर की सूरत में मुस्तफ्ती शिकवे भी करते और जल्द जवाब की गुजारिश करते नजर आते थे। स वक़्त मुफ्तियान–ए–किराम का एक खास वक़ार था। मुफ्ती–ए–आजम–ए–हिंद, मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी, मुफ्ती अख़्तर रजा अजहरी, मुफ्ती जलालुद्दीन अमजदी वगैरहुम (रहिमहुमुल्लाह तआला) जैसे अस्मा–ए–गरामी सुनकर सामेईन के सर अकीदत से झुक जाया करते थे। बड़े–बड़े काबिल उलेमा मौजूद थे मगर हर एक को मुफ्ती नहीं कहा जाता था, बल्कि "मौलाना" और कुछ खास शख्सियतों को "अल्लामा" जैसे इज़्ज़ती अल्काब से नवाजा जाता था, आम उलेमा के लिए "मौलवी" ही काफी समझा जाता था। यह भी याद रहे कि उस दौर में मुफ्ती बनने के लिए कोई बाकायदा कोर्स लाजिमी नहीं था, बल्कि किसी माहिर, तजुर्बेकार और जईद मुफ्ती की सोहबत में रहकर सीखना, उनसे इस्लाह लेना और उनकी तस्दीक के बाद ही फतवा देना मोअतबर समझा जाता था। गुज़िश्ता दौर में मुफ्तियान–ए–किराम जब तक मुकम्मल तहक़ीक़ न कर लेते, फतवा जारी नहीं करते थे।फिर अचानक ऐसे इदारे सामने आए जो मुफ्ती बनाने लगे, ऑनलाइन इफ्ता के कोर्स शुरू हो गए, नतीजतन मुफ्तियान–ए–किराम की कसरत हो गई। हाल यह हो गया कि जो अरबी किताबों की चंद सतरें दुरुस्त नहीं पढ़ सकते, वो भी मुफ्ती बन बैठे। हर मुक़र्रिर व ख़तीब "मुफ्ती" कहलाने लगा, अभी इफ्ता में दाख़िला भी नहीं लिया कि नाम के साथ "मुफ्ती" लग गया।अब तो मकातिब भी मुफ्तियान–ए–किराम से भर गए हैं। यहां तक भी मामला काबिले–बरदाश्त था, मगर निस्वाँ के इदारों ने तो हद ही पार कर दी। अभी मदरसा सही तौर पर क़ायम भी नहीं होता कि इफ्तिताह–ए–बुख़ारी, ख़त्म–ए–बुख़ारी बल्कि "मुफ्तिया" कोर्स तक शुरू कर दिया जाता है। इबारत–ख़्वानी का सलीक़ा नहीं और "मुफ्तिया" का लक़ब लगना शुरू हो जाता है। आज जिस क़दर मुफ्तियान–ए–किराम और मुफ्तियात की कसरत है, शायद तारीख़ में इसकी मिसाल नहीं मिलती। तक़रीबन एक लाख सहाबा–ए–किराम में से चंद जलीलुल क़द्र सहाबा ही फतवा दिया करते थे।

अफसोस कि आज मुफ्ती व मुफ्तिया कोर्स कराने वालों में से बहुत से ऐसे हैं जिन्हें खुद किसी माहिर और हाजिक मुफ्ती की निगरानी में रहकर अपनी इस्लाह की जरूरत है। मामला कुछ यूं हो गया है जैसे कुछ मदरसों में हर तालिब–ए–इल्म को आलिम, फाजिल या हाफिज की दस्तार दे दी जाती है ताकि इदारे का नाम हो जाए।हालांकि मुफ्ती होना कोई मामूली बात नहीं। अहले–इल्म जानते हैं कि इस्तिलाहन मुफ्ती, मुज्तहिद को कहा जाता है और मुज्तहिद बनना कोई खेल नहीं। अगर मुज्तहिद न भी हो तो कम से कम तहकीक़ी जौक़, हालात–ए–जमाना पर नजर, अस्बाब–ए–सित्तह और आदाब–ए–इफ्ता की बुनियादी समझ तो होनी चाहिए। लिहाजा हमें चाहिए कि इस मुअज्जज लक़ब को इतना सस्ता न करें कि इसकी वक़ाअत ही खत्म हो जाए। हर आलिम व मुक़र्रिर को मुफ्ती न बनाया जाए, बल्कि जो वाक़ई कार–ए–इफ्ता से वाबस्ता हों, उन्हीं को "मुफ्ती" कहा और लिखा जाए, और बाक़ी उलेमा के लिए "मौलाना" कहना ही काफी समझा जाए।

लिजिए हक़ीक़ी हालात

जहन्नुम जिंदगी को जन्नत कैसे बनाएं

(सदा ए बुलंद न्यूज –शेख़ मौलाना शाही) शौहर के ख़राब रवैये से हर बीवी के सामने तीन रास्ते होते हैअब अकल्मन्द बीवी कौन सा रास्ता चुने ? शौहर या बीवी का ख़राब रवैया देखकर हर बीवी या मियां के सामने तीन रास्ते होते है, और हर बीवी इन तीन रास्तों मे से एक रास्ता जरूर चुनती है, अगर शौहर या बीवी एक दुसरे के साथ अच्छा सुलूक नही करते, आपस में वक्त नही देते, मोबाइल टीवी और दोस्तों में मसरूफ रहते हैं, इज्जत व प्यार नही देते, हर वक़्त झगड़ा करते हैं,एक दुसरे को गालियां देते हैं, मां बहन या कोई भी तीसरे शख्स की बातों मे आकार बे इज्जत करते हैं, मतलब किसी भी ऐतबार से मियां बीवी एक दुसरे से राहत के बजाय तकलीफ पहुंचाती है, तो इस जानवर वाली जिंदगी में दोनों में से कोई इन तीन रास्तों मे से एक रास्ता चुनता है।

पहला रास्ता

कुछ बीवियां जो ईमान की कमजोर होतीं हैं, वो शौहर के ख़राब रवैये या खुद के तकब्बुर घमंड जिद में गैर मेहरम से राब्ता बना लेती है, या कुछ औरतों या मर्दों का अपनी शादी से पहले की दुसरे से अफैर रहा होता है जो शादी के बाद भी नाजायज संबंध में रहता है ज्यादातर औरतें फिर उसके साथ अपने सुख दुख शेयर करने लगती है, और वो शख़्स भी उसके साथ बहुत हमदर्दी से पेश आता है, हमदर्दी वाला ये ताल्लुक पहले दोस्ती मे तब्दील होकर बड़े गुनाहों की तरफ ले जाता है, इसमें मुब्तिला होकर जिना एक ख्वाहिश लत और एक तलब बन जाती है। ऐसी सुरत मे शौहर बीवी और उसका हमदर्द तीनो ही गुनाहगार ठहरेंगे।

दूसरा रास्ता

कुछ बीवियां ईमान की मजबूत होती है,लेकिन हिम्मत की कमजोर होती है, अगर उनका शौहर या बीवी उनके साथ ख़राब रवैया रखता है, जैसा कि उपर लिखा है, तो ये बीवियां या शौहर अपनी इज्जत आबरू की तो हर दम हिफाजत करते हैं, लेकिन अंदर से मुकम्मल टूट जाते है, उनका हंसना रस्मी होता है, उनकी मुस्कुराहटे रस्मी होती है, उनकी बोलचाल रस्मी होती है, उनका लोगों से मिलना और बोलचाल करना रस्मी होता है, ये दिन की रोशनी मे भी अंधेरा महसूस और पसंद करते हैं अंदर ही अंदर घुटते है, और रात के अंधेरे मे खून के आंसू रोते हैं, ये मियांब्बीवियां जिन्दा लाश बनकर जिंदगी गुजारते हैं, और बरोज महशर शौहर की बीवी उस वक्त तक जन्नत मे दाखिल ना हो सकेगी जब तक शौहर के आंसूओं का हिसाब ना दे दे, क्योंकि रब तआला अपने हुकूक तो माफ कर देगा लेकिन अपने बंदो के हुकूक तब तक माफ नही करेगा जब तक सामने वाला माफ ना करे दे।

तीसरा रास्ता

इस तीसरे किस्म के रास्ते पर चलने वाले और बीवियों का ईमान मजबूत तो होता ही है साथ मे ये हिम्मत और इस्तकबाल की पहाड़ भी साबित होती है, ये मायूस नही होते बल्कि फिक्र करते हैं, ये शोहर या बीवी के ख़राब रवैये को खुद के लिए चेलेंज तसव्वुर करते हैं, के किस तरह शोहर या बीवी को अपने तरफ माइल किया जाए। कैसे मुश्किलों को आसान किया जाए बिगड़ते हुए घर को कैसे बचाया जाए।

फिर बीवियां शौहर के गुस्से पर सामने जवाब नही देतीं, सब्र करके बरदाश्त करतीं हैं, ये शोहर के साथ बहुत ज्यादा नर्म और प्यार भरा रवैया रखती है, शोहर के आने से पहले खुद को दुल्हन की तरह तैयार कर लेती है के शोहर का ध्यान कही और ना जाए, ये जानती है कि शोहर के वालिदेन की ख़दिमत फर्ज नही, लेकिन फिर भी खुद से सास ससुर की ख़दिमत करती है, के बुजुर्गो की दुआओं से उनका घर बसा रहे, ये तकियो मे मुहं छिपाकर रोने की बजाय सजदों मे रोने को तरजीह देती है, ये सजदों मे आंसू बहाकर रब के हुजूर शोहर की वापसी मांगती है, ये तहज्जुद मे उठकर रब की बरागाह मे हाजिरी लगाती है, और आंखे नम किए अपनी आह उस रब के सामने रखकर अपनी खुशीयां मांगती है। अल्लाह तआला उनकी हिम्मत और मदद के लिए पुकारने पर उन्हे मायूस नही करता, उनकी हिम्मत, सब्र, कुरबानीयों का फल देते हुए उनके शोहर का दिल उनके तरफ फेर देता है।

अब अकल्मन्द बीवी कौनसा रास्ता चुने ? अगर बीवी पहला रास्ता चुनती है तो दुनिया मे जिल्लत व रुसवाई और आख़रित मे शोहर और हमदर्द समेत सख़्त अजाब के हकदार ठहरेंगे। अगर बीवी दुसरा रास्ता चुनती है तो गलीज शोहर की वजह से अपना ही दिल जलाती है, अपना ही खुन जलाती है, अपने को तकलीफ देने के सिवा कुछ हासिल नही होगा, लेकिन उसको अल्लाह तआला के यहां इस सब्र और इज्जत आबरू की हिफाजत करने पर बे तहाशा अज्र व सवाब मिलेगा।

और अगर बीवी तीसरा रास्ता चुनती है, शोहर की बेगैरती को खुद के लिए चेलेंज तसव्वुर किए हिम्मत और गौर फिक्र से काम लेती है जैसा कि उपर लिखा है तो 80: बीवीयां अल्लाह तआला के हुक्म से अपने मकसद मे कामयाब होकर एक खुशगवार अज्दवाजी जिंदगी गुजारती है। अपनी दुनिया और आखिरत दोनों में कामियाब हो जाती है।हम यहा कहना चाहते है के शोहर के ख़राब रवैये पर हर बीवी को तीसरा रास्ता चुनना चाहिए , इन शा अल्लाह! अल्लाह तआला उसे मायूस नही करेगा।

यहां एक और बात कहना चाहेंगे के अगर किसी भी बीवी की वजह से नेक शौहर की आंखों में शोहर एक भी आंसू आ जाए तो जन्नत मे उस वक्त तक ना जा सकेगी जब तक शौहर उसे माफ ना कर दे। आप कहेंगे के हम ऐसा फतवा लगा रहे है, तो याद रखे के ये फतवा नही दीन–ए–इस्लाम है, अहादीस का मफहूम है के जहां किसी एक इंसान के दिल दुखाने पर रोजा नमाज सारी इबादतें उस वक़्त तक काम नही आएगी जब तक सामने वाला माफ ना कर दे। और औरतों से नमाज के बाद उसके शौहर की फरमाबरदारी का हिसाब लिया जाएगा अगर शौहर ने मुआफ नहीं किया तो बीवी जन्नत में दाखिल न होगी चाहे उसने दुनिया में कितनी भी नेकियां कमाईं हों यानि हुकूक अल इबाद की कोताही से बचे। और कोशिश करना चाहिए की बीवी के कोई भी ऐसे बद–अमल बदजुबानी और नाफरमानी की वजह से शौहर की आंखो मे आंसू ना आए।

(नोट – पढ़ते रहिए हर अंग में राह ए जिन्दगी पर उम्मीद ए रोशन चिराग की एक अदना पहल जारी है)

तीन बार की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के पास न अपना घर,न जमीन न गाड़ी घोड़ा

(सदा ए बुलंद न्यूज) पश्चिम बंगाल चुनाव के बीच मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की संपत्ति को लेकर बड़ा खुलासा सामने आया है। नामांकन के दौरान दाखिल हलफनामे में उन्होंने अपनी पूरी संपत्ति का विवरण दिया है।

– न घर, न जमीन–

तीन बार मुख्यमंत्री रह चुकी ममता बनर्जी ने बताया कि उनके पास कोई अचल संपत्ति नहीं है। यानी न घर, न जमीन और न ही कोई बिल्डिंग उनके नाम पर है।

कुल संपत्ति कितनी–

हलफनामे के मुताबिक उनकी कुल संपत्ति 15.37 लाख रुपये है। इसमें करीब 75,700 रुपये नकद और बैंक खातों में 12.76 लाख रुपये जमा हैं।

– सोना और अन्य संपत्ति–

ममता बनर्जी के पास 9.75 ग्राम सोने के आभूषण हैं, जिनकी कीमत करीब 1.45 लाख रुपये बताई गई है। इसके अलावा उनके पास न कोई वाहन है, न शेयर, बॉन्ड या अन्य बड़ा निवेश।

– सोना और अन्य संपत्ति–

ममता बनर्जी के पास 9.75 ग्राम सोने के आभूषण हैं, जिनकी कीमत करीब 1.45 लाख रुपये बताई गई है। इसके अलावा उनके पास न कोई वाहन है, न शेयर, बॉन्ड या अन्य बड़ा निवेश।

आह... ये स्मार्ट मीटर का बिल,अब कुप्पी जलवाकर ही पीछा छोड़ेंगे

(सदा ए बुलंद न्यूज) ये कैसी स्मार्ट मीटर की योजना है, अगर किसी गरीब परिवार ने अपने ऊपर कर्ज से आर्थिक कमजोरी बेरोजगारी की वजह या शादी ब्याह करने से बिल न भर पाया, तो अब सरकार तो फौरन बिजली बन्द कर देगी उस गरीब के घर अगर कोई बीमार है या मैय्यत हो गयी है या शादी ब्याह है या कोई भी प्रोग्राम फंक्शन है या उसके घर में कोई नहाने कपड़े धोने या कोई लेटरीन में बैठा है और लाईट काट दी गई और घर में पानी की बहुत सख्त जरूरत है। सब जानते हैं शहर में नल बिल्कुल खत्म पर हैं और जो हैं भी उनमें पानी साफ नहीं आता है कीट के साथ आता है तो कोई घर पानी कहां से लाएगा अब अगर उस मीटर में 10/20 हजार का बिल बकाया है और वह गरीब पहले से ही बहुत कर्ज में डूबा है उसके पास कोई एक रुपया भी नही है और सरकार ने ऐसी सख्ती कर रखीं है कि जब तक मीटर में अडवांस नहीं होंगे तब तक कोई भी जतन कर लिया जाए घर में लाईट नहीं आ सकती चाहें घर में शादी हो इंतकाल हो, कोई प्रोग्राम हो, या बीमार हो या नहाने को बैठा यहां तक कि वह लेटरीन में शौच को क्यूं न बैठा हो रहम नहीं किया जाएगा। आखिर बिजली विभाग की जनता के लिए इतनी सख्त सजा क्यूं।

अगर स्मार्ट मीटर में अडवांस डालने के लिए रुपए नहीं हैं तो आम आदमी क्या करेगा और ये तो तय है हर घर के मीटर में पहले वाले मीटरों में महीने पर मुश्किल से 200/500 रुपए ही बिल आता था ज्यादा खर्चा है तो 1000 रुपए का बिल आता था अब तो 10/20 हजार 30 हजार बिल आ रहा है लाखों परिवार इस सदमे में हैं कि अब घर के और खर्चे चलाएं बेटियों की शादी करें बच्चों को पढ़ाएं या इतना महंगा बिल भरें। ऐसा कोई घर नहीं है जो टेंशन में नहीं है इस महंगे बिल से..... तो बेचारा प्यास तड़पता रह जाएगा। गरीब आदमी तो हर तरफ से लटका हुआ है।

वित्त मंत्री ने 47 करोड़ रुपए की लागत का सैटेलाइट बस अड्डा का किया लोकार्पण

रिपोर्ट – खालिद ख़ान

(शाहजहांपुरध्सदा ए बुलंद न्यूज)जनपद में आज 47 करोड़ रुपये की लागत से परिवहन विभाग की 04 महत्वपूर्ण परियोजनाओं का लोकार्पण माननीय मंत्रीगण के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। अहमदपुर नियाजपुर स्थित नवनिर्मित सैटेलाइट बस अड्डा,जिसका नाम लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर जी के नाम पर रखा गया है,के साथ 04 महत्वपूर्ण परियोजनाओं का वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री सुरेश कुमार खन्ना जी एवं उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय राज्य मंत्री परिवहन विभाग (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह जी के कर कमलों द्वारा बटन दबा कर लोकार्पण किया गया। नवनिर्मित सैटेलाइट बस अड्डा, जनपद की यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।इस परियोजना से न केवल शहर की कनेक्टिविटी प्रमुख नगरों से बेहतर होगी, बल्कि यात्रियों को भी सुविधाजनक एवं व्यवस्थित परिवहन व्यवस्था उपलब्ध हो सकेगी। साथ ही, जनपद में विभिन्न विकास कार्यों जैसे सड़क निर्माण, स्मार्ट सिटी परियोजनाएं एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं के विस्तार से क्षेत्र के समग्र विकास को नई गति मिल रही है।

जनपद प्रशासन सभी नागरिकों से अपील करता है कि सार्वजनिक संपत्तियों के संरक्षण एवं यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें।

अकीदत से मनाया सैयद माशूक हसन मियां का सालाना उर्स

रिपोर्ट–राशिद हुसैन

(शाहजहांपुर / सदा ए बुलंद न्यूज)

हजरत सैयद माशूक हसन मियां फातमी कलंदर रहमतुल्लाह अलैह का दूसरा एक दिवसीय सालाना उर्स अकीदत ओ मोहब्बत के साथ मनाया गया। इस दौरान खुशहाली व सलामती की दुआ की गई।

सोमवार को सुबह दस बजे मोहल्ला एमन जई जलाल नगर में एक मीनार मस्जिद के पास स्थित मजार पर कुल शरीफ का आगाज तिलावत ए कुरआन से हुआ।

हाफिज अब्दुल कय्यूम खां ने कहा कि अल्लाह के वलियों से अकीदत रखने वाले दुनिया व आखिरत में कामयाब और कामयाब होते हैं। उन्होंने कहा कि हजरत सैयद माशूक हसन मियां फातमी कलंदर रहमतुल्लाह अलैह ने हमेशा दीन का प्रचार किया। इस दौरान हाफिज इस्लाम बरकाती, वसीम निजामी, हाफिज अदनान ने नात व मनकबत पेश की। इसके बाद कुरआन की आयात पढ़कर साहिबे उर्स को ईसाले सवाब करते हुए हाफिज अब्दुल कय्यूम खां ने मुल्क की तरक्की और खुशहाली की दुआ की।

इसके बाद महफिल ए समा में कव्वाल इमरान आरिफी ने सूफियाना कलाम सुनाकर जायरीन को झूमने पर मजबूर कर दिया। जायरीन ने मजार पर चादरपोशी व गुलपोशी की। लोगों में लंगर बांटा गया।

इस मौके पर हाफिज अब्दुल करीम, हाफिज शीबू, हाफिज मुहम्मद दानिश, सूफी मोहम्मद नबी, सूफी जक्कू मियां, हसीब खां, शादाब, सफदर अली गाजी, अनस रजा, राशिद हुसैन, सुलेमान, मोहम्मद चांद मियां, मुफीज खां, जाबिर अली, रईस अहमद, दिलशाद बब्बू, सरताज, तौसीफ, कलीम, साबिर, फैज, आमिर शाह वारसी, इमरान खां आदि समेत तमाम लोग मौजूद रहे। अंत में आयोजक हसीब खां ने शुक्रिया अदा किया।

मेरे पति को आज ही फांसी पर लटका दो- पत्नि

(कानपुर/ सदा ए बुलंद न्यूज) उत्तर प्रदेश के कानपुर से रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना सामने आई है। यहां एक युवक ने अपनी दो जुड़वां बेटियों की गला काटकर हत्या कर दी। इसके बाद उसने पुलिस को सूचना दी। बेटी की हत्या किए जाने पर मां बदहवास है। बार–बार मां एक ही बात कह रही है, मेरे पति को आज ही फांसी पर लटकाओ। महिला से जब घटना के

बारे में पूछा गया तो कहा कि मुझे पुलिस ने जगाया तो घटना के बारे में जानकारी हुई, क्योंकि वह दूसरे कमरे में सोई हुई थी।

कानपुर के नौबस्ता थाना क्षेत्र के त्रिमूर्ति अपार्टमेंट में आरोपी पिता ने अपने 11 साल की जुड़वां बेटियों की धारदार हथियार से गला काटकर हत्या कर दी। रविवार तड़के साढ़े चार बजे डायल–112 पर पुलिस को सूचना मिली कि दो बेटियों की गला रेतकर हत्या कर दी गई है। घटनास्थल पर पहुंची पुलिस मौके का मंजर देखकर हैरान रह गई। फ्लैट के अंदर दाखिल होते ही दोनों मासूमों के शव पड़े हुए थे। गले पर गहरे घाव के निशान थे। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

शाहाबाद में बिना सूचना बिजली काटे जाने पर हंगामा, मोहल्ला वासियों ने जताया आक्रोश

(हरदोई / सदा ए बुलंद न्यूज) हरदोई जनपद के नगर पालिका परिषद शाहाबाद के मोहल्ला खलील में उस समय आक्रोश फैल गया जब बिजली विभाग द्वारा बिना किसी पूर्व सूचना के कई घरों के कनेक्शन काट दिए गए। बताया जा रहा है कि स्मार्ट मीटर में रिचार्ज न होने के कारण विभाग की टीम ने अचानक कार्रवाई करते हुए बिजली आपूर्ति बंद कर दी।

मोहल्ला वासियों का आरोप है कि उन्हें पहले कोई चेतावनी या सूचना नहीं दी गई, जिससे अचानक अंधेरे में रहने को मजबूर होना पड़ा। स्थानीय निवासी मोहम्मद हनीफ ने इस कार्रवाई पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा कि इस तरह बिना सूचना के बिजली काटना गलत है। उन्होंने कहा कि

अगर रात के समय किसी प्रकार की अप्रिय घटना घटती है, तो इसकी पूरी जिम्मेदारी शाहाबाद के एसडीओ पर होगी।मोहम्मद हनीफ ने यह भी बताया कि क्षेत्र में छोटे बच्चे, बुजुर्ग और बीमार लोग रहते हैं, जिनके लिए अचानक बिजली कटना गंभीर समस्या बन सकता है। उन्होंने बिजली विभाग से मांग की है कि भविष्य में इस तरह की कार्रवाई से पहले उचित सूचना दी जाए, ताकि लोग समय रहते व्यवस्था कर सकें।वहीं, मोहल्ले के अन्य लोगों ने भी विभाग के इस रवैये को लापरवाही बताते हुए नाराजगी जताई है और जल्द से जल्द बिजली आपूर्ति बहाल करने की मांग की है।अब देखना यह होगा कि बिजली विभाग इस मामले को कितनी गंभीरता से लेता है और मोहल्ला वासियों की समस्याओं का समाधान कब तक किया जाता है।

ऐ ईमान वालों आखिर कब तुम बेदार होगे, और कब मुत्ताहिद होगे - कौमी ख़त

आलम ए नजर–सदा ए बुलंद न्यूज ईरान के सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के सेक्रेटरी अली लारीजानी का दुनिया के मुसलमानों और इस्लामिक सरकारों के नाम पैगाम शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जो सबसे रहम करने वाला और दयालु है। **दुनिया के मुसलमानों और इस्लामिक देशों की सरकारों के नाम**

1. ईरान पर अमेरिकी–जायोनी गठबंधन ने उस वक्त धोखेबाज हमला किया, जब बातचीत अभी भी जारी थी। इस हमले का मकसद सिर्फ ईरान को कमजोर करना नहीं, बल्कि उसे तोड़ देना था।

इस हमले में इस्लामिक क्रांति के कई महान नेताओं, बहादुर सैन्य कमांडरों और मासूम नागरिकों को शहीद कर दिया गया। लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि ईरानी कौम पहले से भी ज्यादा मजबूती और एकता के साथ खड़ी हो गई।

2.

आप जानते हैं किकृकुछ औपचारिक बयानों को छोड़करकृकोई भी इस्लामिक सरकार खुलकर ईरान की मदद के लिए आगे नहीं आई।

फिर भी, ईरान की जनता ने अटूट हौसले और ईमान के साथ ऐसे दुश्मन का मुकाबला किया जो ताकतवर जरूर है, लेकिन आज खुद यह समझ नहीं पा रहा कि इस रणनीतिक नाकामी से कैसे बाहर निकले।

3.

ईरान बड़े और छोटे शैतानोंकृअमेरिका और इजराइलकृके खिलाफ अपने प्रतिरोध के रास्ते पर मजबूती से चलता रहेगा।

लेकिन सवाल यह हैरू क्या इस्लामी सरकारों का यह रवैया उस हदीस के खिलाफ नहीं है जिसमें पैगंबर (सल्लल लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कृअगर

कोई मुसलमान अपने भाई की पुकार सुनकर भी उसकी मदद के लिए नहीं उठता, तो वह सच्चा मुसलमान नहीं है।ष्
तो फिर यह कैसी खामोशी है?

4.

कुछ देशों ने तो यहां तक कह दिया कि क्योंकि ईरान ने अमेरिकी ठिकानों और उन जगहों को निशाना बनाया जहां से उस पर हमले हो रहे थे, इसलिए ईरान उनका दुश्मन बन गया।

क्या ईरान को तब भी चुप रहना चाहिए जब आपके ही देशों में मौजूद ठिकानों से उस पर हमला किया जाए?

सच्चाई यह है कि आज की जंग में एक तरफ अमेरिका और इजराइल हैंकृऔर दूसरी तरफ एक मुस्लिम देश ईरान और उसके साथ खड़ी प्रतिरोध की ताकतें।

अब फैसला आपको करना हैरू आप किस तरफ खड़े हैं?

5.

इस्लामी दुनिया के भविष्य के बारे में गंभीरता से सोचिए।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि अमेरिका कभी आपका सच्चा दोस्त नहीं रहा, और इजराइल आपके हितों के खिलाफ खड़ा है।

अपने देशों, अपने लोगों और पूरे क्षेत्र के भविष्य के लिए फैसला लेने का वक्त आ गया है।

ईरान आपकी भलाई चाहता हैकृउसका आप पर हावी होने का कोई इरादा नहीं।

6.

अगर इस्लामी उम्मा सच्ची एकता के साथ खड़ी हो जाए, तो यह ताकत सभी देशों के लिए सुरक्षा, तरक्की और आजादी की गारंटी बन सकती है।

याद रखिएरू
उम्मत की ताकत उसकी एकता में है।
और जब उम्मत एक हो जाती है, तो कोई भी ताकत उसे झुका नहीं सकती।

अली लारीजानी

(ईरान के सुप्रीम नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल के सेक्रेटरी)

The US and Israel have engulfed the entire world in the fire of destruction by cowardly attacking Iran

(World news - Sada e BuLand News) On February 28, 2026, the US and Israel launched a massive, cowardly, treacherous attack on Iran, dubbed 'Operation Epic Fury'. The attack targeted Iran's top military leadership and nuclear installations. Iran responded by launching missiles at Israeli and US bases in the Middle East, triggering a fierce war in the region.The February 28, 2026 attack primarily plunged the world into a crisis of inflation and attempted to force each other into war. The US and Israel jointly targeted Iran's missile sites, air defense systems, and top leadership.

Leadership Targeted According to reports, Iran's Supreme Leader, Ayatollah Ali Khamenei, and other key officials were targeted in the attack. In which Iran's Supreme Leader, Ayatollah Ali Khamenei, his wife, daughter, son-in-law, and hundreds of high-ranking officials were martyred in a treacherous bombing.Iranian retaliation: Iran launched missile and drone attacks on bases in approximately 12 countries belonging to Israel and US allies (such as Qatar, UAE, Kuwait, Bahrain, Jordan, Saudi Arabia, Turkey, Israel), and destroyed US bases. Following this attack, tensions have escalated in the Strait of Hormuz, and Iran has adopted a tough stance on its nuclear program.The conflict has spread to several countries in the Middle East, causing massive civilian and infrastructure damage.

Larijani's message to Muslim world voices dismay, warnings and assurances.

By Ali HarbIran's security chief has issued a six-point message to Muslim-majority nations aiming to spell out Tehran's position and re-assert it's not going to relent in the fight against the US and Israel.Ali Larijani tried to appeal to a religious sense of duty for Muslims to stand together, saying with few exceptions Islamic countries have failed to support Iran against what he called "treacherous aggression"."Is the stance of certain Islamic governments not at odds with the Prophet's [Mohammad] saying: 'Whoever hears a man calling out, 'O Muslims!' and fails to answer him is not a Muslim'?"

He went on to justify Iran's attacks across the region, which countries in the Gulf have described as a blatant aggression against their sovereignty, appearing to warn there is no middle ground in the ongoing confrontation."Which side are you on?" Larijani asked. He followed his thinly veiled warning by emphasising Iran is not seeking domination over its neighbours."The unity of the Islamic nation, if realised with full strength, is capable of guaranteeing security, progress, and independence for all its states," Larijani said.

The message appears to make the case that the US military presence in the Middle East should be replaced by regional cooperation to ensure collective security. The argument was made as Iranian missiles and drones continue to fly across the region daily, targeting countries that host US bases but stress they are not involved in the war.

Military operations can neutralise Iran's 'shore-based threats'

way, an analyst says.

Joseph Votel, a distinguished military fellow at the Middle East Institute, former four-star general and commander of US Central Command, said that while threats from missiles and mines exist, international cooperation can safeguard shipping lanes, even as a focus remains on neutralising Iran's broader military capabilities."The United States or international partners may assist with minesweepers to ensure waterways are free of mines. Continued military operations also help ensure shore-based threats can't target shipping moving through the straits," he told Al Jazeera. "There is a way to do this, but right now, the focus is on the campaign against capabilities within Iran."

Iran's determination to preserve its military means the campaign will take time, but the US is prioritising both immediate and strategic objectives, Votel said.

"While we are aware of the threat in the straits, our priority is targeting capabilities on the ground. It takes time to deploy resources for both. President Donald Trump has asked for international assistance to keep the strait open and allow the flow of oil and natural gas."

Allahabad High Court reprimands Uttar Pradesh government in Madrasa case

Allahabad HC questions UP order shutting unrecognised madrasa, says non-recognition doesn't mean closure

(Sada e Buland)"The seal put on the madarsa will be opened within 24 hours of production of a certified copy of this order," the Allahabad High Court ruled on January 16, 2026.

Questioning the Uttar Pradesh government's decision to order the closure of an unrecognised madrasa, the Lucknow Bench of the Allahabad High Court observed that the absence of official recognition does not automatically justify shutting down an educational institution.

The court was hearing a writ petition filed by Madarsa Ahle Sunnat Imam Ahmad Raza, which challenged a May 1, 2025 order issued by the District Minority Welfare Officer of Shrawasti district. The order had directed the madrasa to cease functioning on the ground that it was operating without official recognition.

A bench comprising Justice Subhash Vidyarthi noted that under the Uttar Pradesh Non-Governmental Arabic and Persian Madarsa Recognition, Administration and Services Regulation, 2016, the consequence of non-recognition is limited to the denial of government grants and does not, by itself, mandate the closure of an institution.

Appearing on behalf of the petitioner, advocate Sayyed Farooq Ahmad argued that the authorities had misapplied the law.

"The regulations clearly provide that an unrecognised madrasa is only disentitled from receiving any grant from the State. Non-recognition does not result in closure," Ahmad submitted before the court.The counsel further informed the bench that the madrasa was not seeking any financial assistance from the government, rendering the closure order legally untenable.

"The petitioner is not asking for any grant from the State. Therefore, directing closure of the madrasa on the ground of non-recognition is beyond the scope of the regulation," Ahmad argued.Referring specifically to Regulation 13 of the 2016 Rules, the petitioner's counsel maintained that the Minority Welfare Officer lacked statutory authority to issue such a directive.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रधान सम्पादक
बहार मोहम्मद
द्वारा लव-कुश प्रिंटर्स, बाड़ूई पेशावरी (आदर्श नगर कालोनी) शाहजहांपुर-242001 से मुद्रित एवं 2, नियर पक्का तालाब बरादरी जिला शाहजहांपुर (उ.प्र.) 242001 से प्रकाशित एवं वितरित प्रधान सम्पादक **बहार मोहम्मद**
मो0 नम्बर 9565100392-9453556135
sadaebulandmgzn@gmail-com
नोट- समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र शाहजहाँपुर (उ.प्र.) होगा।